बी॰ए॰-भाग-3
हिन्दी-प्रतिष्ठा
पेपर - 8
(संत रविदास)

रमेश कुमार यादव
हिन्दी-विभाग डी.के.कालेज
डुमराँव बक्सर बिहार

संत रविदास -

जाके कुटुंब सब ढोर ढोवंत।
फिरहि अजहूँ बानारसी आसपासा॥
आचार सहित विप्र करहि डंडउति।
तिन तिनै रविदास दासानुदास॥

ऐसी मेरी जाति विख्यात चमार।

पावर जंगम कीट पतंगा पूरि रह्यो हरिराई।

गुन निर्गन कहियत नहि जाके।

अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी।
प्रभुजी तुम चंदन हम पानी,
जाकी अंग अंग बास समानी॥

जाति ओछा पाती ओछा, ओछा जनमु हमारा।

दूध त बछरै थनह बिडारिउ।
फुलु भँवर, जलु मीन बिगारिउ॥
माई, गोबिन्द पूजा कहा लै चढावऊँ।
अवरु त फूल न पावऊँ॥
मलयागिरिवै रहै है भुअंगा।
विषु अमृत बसहीं इक संगा॥

अखिल खिलै नहि, का कह पण्डित,
कोई न कहै समुझाई ।
अबरन बरन रूप नहिं जाके
कहँ लौ लाइ समाई ॥
चंद सूर नहिं, राति दिवस नहि,
धरनि अकास न भाई ।
करम अकरम नहिं सुभ
असुभ नहिं का कहि देहुँ बडाई ॥

जब हम होते तब तू नाहीं,
अब तू ही, मैं नाहीं ।
अतल अगम जै लहरि मइ उदधि,
जल केवल जल माहीं ॥

माधव क्या कहिए प्रभु ऐसा,
जैसा मानिए होत न तैसा ।
नरपति एक सिंहासन सोइया,
सपने भया भिखारी ॥
अछत राज बिछुरत दुख पाइया,
सो गति भई हमारी ।

मन चंगा तो कठौती में गंगा ।

गुरु नानक देव -

इस दम दा मैनूँ कीबे भरोसा,
आया न आया न आया।
यह संसार रैन दा सुपना,
कहीं देखा कहीं नाहिं दिखाया॥

जो नर दुख में दुख नहि मानै
सुख सनेह अरु भय नहि जाके,
कंचन माटी जानै॥

आवै जाणों आपे देई
आखहि सिभि केई कई।
जिसनौ बखसे सिफति सालाह,
नानक पाति साही पातिसाहु॥

सुरखान खमसान कीआ हिन्दुस्तान डराइया।
आपै दोस न देई करता जपु करि मुगल चढाइया॥

जिन सिर सोहन पटीआ मोगी पाइ संघूर।
ते सिर काती मुनी अहि गल विचि आपै घूडा॥

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग डी. के. कालेज
(डुमरांव बक्सर)